(iii) कर्म (Karma)

(iv) अहिंसा (Ahimsa)

(v) गुण (Guna)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3625 I

Unique Paper Code : 2135000011

Name of the Paper : Introduction to Jain Philosophy, GE

Name of the Course : **Common Prog. Group, G.E : Sanskrit**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Answer any **five** questions.
3. Unless otherwise required in a question, answers should be written in Sanskrit or in Hindi or in English but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

3. **टिप्पणी** : अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर **संस्कृत** या **हिन्दी** या **अंग्रेजी** किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों के उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

1. "जैन दर्शन का तत्त्वमीमांसा सापेक्षवादी और यथार्थवादी है" व्याख्या कीजिए ।

"The Jaina metaphysics is relativistic and realistic pluralism". Discuss it.

2. जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य की व्याख्या कीजिए ।

Explain the Jain concept of Dravya.

3. भारतीय समाज और संस्कृति में जैन दर्शन की भूमिका पर निबन्ध लिखिए ।

Write an essay on role of Jainism in Indian society and culture.

4. जैन दर्शन के उद्‌भव और विकास की व्याख्या कीजिए ।

Explain origin and development of Jain philosophy.

5. भारतीय दर्शन की समृद्धि में जैनदर्शन के अवदान पर प्रकाश डालिए ।

Throw light on the contribution of Jain philosophy in enrichment of Indian philosophy.

6. "जैन दर्शन और आधुनिक विश्व' इस विषय पर निबन्ध लिखिए ।

'Jainism in modern world' write an essay.

7. किन्ही **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

Write a short notes on any **three**.

(i) आत्मा (Atman)

(ii) धर्म (Dharma)